17 जून 2009, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

अरे ! यह पुण्य का ठाठ भी ओस बिन्दु और उल्कापात के समान क्षणभंगुर है। जिसप्रकार ओस बिन्दुओं पर महल नहीं बनाया जा सकता; उसी प्रकार पुण्य वैभव द्वारा कहीं आत्मशांति की साधना नहीं हो सकती।

ह्न यदि चूक गये तो, पृष्ठ-129

वर्ष : 32, अंक : 6 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
जून (द्वितीय), 2009 प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

ग्रीष्मावकाश में शिक्षण शिविरों की धूम

मई एवं जून माह में पूरे देश में ग्रुप शिविरों एवं बाल संस्कार शिविरों के माध्यम से अभूतपूर्व धर्म प्रभावना हुई। भिण्ड (म.प्र.), बुन्देलखण्ड, अलवर (राज.), नागपुर और हिंगोली (महा.) में ग्रुप शिविर लगाये गये। लगभग 200 स्थानों पर लगे इन शिविरों में 225 विद्वानों के माध्यम से लगभग 35-40 हजार बाल-बालिकाओं ने जैनत्व के संस्कार अर्जित किये। साथ ही हजारों साधर्मियों ने ज्ञान गंगा में स्नान किया। ग्रुप शिविरों के अतिरिक्त सिद्धायतन (द्रोणगिरि), इन्दौर, उदयपुर, पिड़ावा, मलकापुर, भोपाल, जयपुर, औरंगाबाद, बिजौलिया आदि स्थानों पर स्थानीय स्तर पर भी बृहद् शिविरों का आयोजन किया गया। कुछ स्थानों के संक्षिप्त समाचार यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं। कुछ आगामी अंक में प्रकाशित होंगे।

1. अलवर (राज.) : अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा-अलवर द्वारा अलवर, भरतपुर, दौसा, टोंक आदि जिलों के लगभग 25 स्थानों पर आयोजित 'जैन बाल संस्कार ग्रुप शिविर-2009' अभूतपूर्व सफलता के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

शिविर का शुभारंभ दिनांक 22 मई, 2009 को श्री सम्मेद शिखर मण्डल विधान के माध्यम से हुआ। ध्वजारोहण श्री अशोककुमारजी ठेकेदार अलवर ने किया। इस अवसर पर पण्डित राजकुमारजी शास्त्री ध्रुवधाम के प्रवचन का लाभ मिला। साथ ही श्री निहालचन्दजी जैन जयपुर, श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई, श्री शांतिलालजी जैन जयपुर एवं डॉ. ममता जैन बांसवाड़ा का विशेष सान्निध्य मिला।

शिविर अलवर के स्थानीय 9 मंदिरों के अलावा, बडौदामेव, खेरली, लक्ष्मणगढ, मण्डावर, सिकन्दरा, दौसा, लवाण, राजगढ, गोविंदगढ, रामगढ, देवली, मण्डाना, थानागाजी, जुरहैरा आदि स्थानों पर संचालित किया गया।

शिविर में श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय जयपुर तथा अकलंक महाविद्यालय बांसवाड़ा से पधारे लगभग 30 विद्वानों द्वारा प्रात: से सायं तक ज्ञान गंगा प्रवाहित की गई।

शिविर संयोजक श्री शशिभूषण जैन के साथ पं. राजकुमारजी शास्त्री एवं डॉ. ममता जैन बांसवाड़ा ने शिविर के विभिन्न स्थानों का निरीक्षण किया।

दिनांक 29 मई को शिविर का समापन समारोह जैन वाटिका के विशाल सभागार में रखा गया, जहाँ लगभग 700 साधर्मियों एवं बालकों की उपस्थिति रही। समारोह में फैडरेशन के केन्द्रीय संगठन मंत्री पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, राज. प्रदेशप्रभारी श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, स्वतंत्रता सेनानी श्री महावीरप्रसादजी जैन, अलवर शहर के विधायक श्री बनवारीलाल सिंघल एवं पण्डित किशनचन्दजी भाई सा. की गरिमामयी उपस्थिति रही।

सभी स्थानों से आये शिविरार्थियों को योग्यतानुसार पुरस्कार वितरित किये गये। शिविर में लगभग 1300 शिविरार्थियों ने धर्म लाभ लिया।

शिविर का आयोजन श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन, दि. जैन मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट कोटा एवं श्री कुन्दकुन्द स्मृति ट्रस्ट अलवर के विशेष आर्थिक सहयोग से किया गया। सम्पूर्ण शिविर पण्डित अजितकुमारजी शास्त्री अलवर के कुशल निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

2. बुन्देलखण्ड (म.प्र.) : यहाँ सागर, छतरपुर एवं दमोह जिलों के लगभग 18 स्थानों पर मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट कोटा के आयोजकत्व में बाल संस्कार ग्रुप शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर ब्र. यशपालजी, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री एवं पण्डित प्रवीणजी शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। शिविर में के.के.पी.पी.एस उज्जैन एवं श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई का विशेष सहयोग रहा।

शिविर में श्री टोडरमल महाविद्यालय, जयपुर के विद्वान सर्वश्री पण्डित तपिशजी शास्त्री उदयपुर, सुधीरजी अमरमऊ, राहुलजी दमोह, जयदीपजी डडूका, दीपकजी खनियांधाना, निशंकजी टीकमगढ, विवेकजी मडदेवरा, दीपकजी मडदेवरा, सुदीपजी अमरमऊ, सौरभजी अमरमऊ, आकाशजी खनियांधाना, भावेशजी उदयपुर, जयेशजी उदयपुर, अनेकांतजी दलपतपुर, शनिजी खनियांधाना, राहुलजी भौगाँव, मोहितजी नौगाँव, अर्पितजी उदयपुर आदि विद्वानों के प्रवचन एवं कक्षाओं का लाभ समाज को मिला।

लगभग सभी स्थानों पर बच्चों को मनोवैज्ञानिक पद्धति से पूजन प्रशिक्षण के साथ-साथ धार्मिक संस्कार दिये गये। रात्रि में अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये। ग्रुप शिविर में लगभग 1200 बच्चों ने उत्साह से भाग लिया।

शिविर संयोजक पण्डित अभिषेकजी शास्त्री मडदेवरा, पण्डित दीपेशजी शास्त्री अमरमऊ तथा पण्डित सौरभजी शास्त्री खड़ैरी थे। ●

सम्पादकीय –

चलते-फिरते सिद्धों से गुरु (30)

(गतांक से आगे ...) ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

स्व-जीव की हिंसा न करना ही मुख्य स्व-जीवदया है। रागादिभावों से जब क्रोध का अभाव होने के कारण परजीवों को मारने का भाव भी नहीं आया तो इसमें परजीवों की दया भी आ गयी; किन्तु स्व-जीव की दया आत्मा की पहचान रूप सम्यग्दर्शन के बिना संभव नहीं है। जो जीव पुण्यरूप शुभराग में धर्म मानता है, वह विकारभाव के द्वारा स्वभाव की हिंसा करता है। 'मेरा शुद्धस्वरूप पुण्य-पाप रहित है' ह्न ऐसी पहिचान करने के पश्चात् ही स्व-दया हो सकती है। जब वस्तुतः स्वरूप में स्थिर हो और शुद्ध ज्ञान-चेतना के अनुभव में लीन हो, तभी स्व-जीवदया रूप धर्म होता है। इसलिए इसमें भी चेतना का शुद्धपरिणाम ही धर्म है ह्न ऐसा आगम में आया है।

कोई भी व्यक्ति वास्तव में पर-जीव को न तो मार ही सकता है, न जीवित ही कर सकता है; अतः रागादि भाव करके स्वयं को दुःखी न करना ही यथार्थ स्व-दया है। अशुभपरिणामों के समय स्वयं तीव्र दुःखी होता है और दयादि के शुभपरिणामों के समय भी जीव आकुलता का ही वेदन होने से दुःखी रहता है, इसलिए अशुभ-शुभ दोनों भावों से स्वयं को बचाना ही वास्तविक स्व जीवदया है।

जो जीव शुद्ध ज्ञानचेतना द्वारा स्वरूप में एकाग्र हुआ, उस जीव के अशुभभाव होते ही नहीं, इसलिए वहाँ स्वयं ही परजीव की दया का पालन होता है। यदि परजीव की दया पालन करने के शुभराग में धर्म हो तो सिद्धदशा में जहाँ पर की रक्षा रूप दया भाव है ही नहीं तो वहाँ सब जीवों के अहिंसा धर्म का अस्तित्व कैसे संभव होगा! इससे सिद्ध होता है कि शुभराग धर्म नहीं है; वास्तविक वीतराग भाव रूप धर्म तो त्रिकाल शुद्धात्मा के आश्रय से ही होता है।

जो व्यक्ति निश्चय सम्यग्दर्शन के विषयभूत आत्मज्ञान और तत्त्वज्ञान से सुपरिचित नहीं है, जिन्हें सच्चे देव-शास्त्र-गुरु के स्वरूप की भी पहचान नहीं है, जो सर्वज्ञता के व्यापक स्वरूप को स्वीकार नहीं करते, मात्र बाह्य क्रियाओं के निर्वाह में धर्म समझकर संतुष्ट रहते हैं और 'मैं सम्यग्दृष्टि हूँ' ह्न ऐसा गर्व से कहते हैं; उनके बारे में आचार्य अमृतचन्द्र का निम्नांकित कथन दृष्टव्य है।

'मैं स्वयं सम्यग्दृष्टि हूँ, मुझे कभी बन्ध नहीं होता, ऐसा मानकर जिनका मुख गर्व से ऊँचा और पुलकित हो रहा है ह्न ऐसे रागी जीव भले ही महाव्रतादि का आचरण करें तथा समितियों की उत्कृष्टता का आलम्बन करें, तथापि वे पापी ही हैं; क्योंकि वे आत्मा और अनात्मा के ज्ञान से रहित होने से सम्यक्त्वरहित हैं।' मूल कलश इसप्रकार हैं।

सम्यग्दृष्टिः स्वयमयमहं जातु बंधो न मे स्या-
दित्युत्तानोत्पुलकवदना रागिणोऽप्याचरन्तु।
आलंबंतां समितिपरतां ते यतोऽद्यापि पापा
आत्मानात्मावगमविरहात्सन्ति सम्यक्त्वरिक्ताः ।। १३७ ।।

उपसंहार करते हुए आचार्यश्री ने कहा ह्न ''आज निश्चय-व्यवहारनयों के माध्यम से आगम में वर्णित धर्म के विविध स्वरूपों की संक्षिप्त चर्चा हुई। प्रवचनों के द्वारा तो मात्र चेतना को जागृत ही किया जा सकता है, जिज्ञासा ही उत्पन्न की जा सकती है। गहराई से धर्म को समझने के लिए तो पूर्वकथित स्वाध्याय के पाँचों अंगों को अपनाना होगा।

प्रथम वांचना, फिर पूँछना, तत्पश्चात् अनुप्रेक्षा अर्थात् बारम्बार विचार करना, तदनन्तर आम्नाय अर्थात् पठित विषय का बारम्बार पाठ करना।

अन्त में धर्मोपदेश द्वारा दूसरों को समझाने से अपना भी स्वाध्याय होता है, जिससे अपने तत्त्वज्ञान का परिमार्जन होता है। अतः विधिवत् एवं नियमित स्वाध्याय अवश्य करें। बस, आज इतना ही। ॐ नमः। ●

श्रोताओं की जिज्ञासा को देखते हुए आचार्यश्री ने आज का प्रवचन बारह भावनाओं पर करने का मन बनाया। प्रवचन प्रारंभ करते हुए आचार्यश्री ने कहा ह्न

''वैराग्य जननी ये बारह भावनायें साधुओं के उत्तरगुणों के रूप में तो महत्त्वपूर्ण हैं ही, मुनिराज तो प्रतिदिन इनके माध्यम से संसार, शरीर और भोगों की अनित्यता, अशरणता एवं असारता का चिन्तन कर अपने वैराग्य का पोषण करते हुए आत्म तत्त्व की नित्यता और शरणभूतता के चिन्तन से स्वरूप में स्थिर होने का पुरुषार्थ में करते ही हैं, श्रावकों के लिए भी ये भावनायें संसार, शरीर और भोगों से उदास कराने में, वैराग्य बढ़ाने में निमित्त बनती हैं। जिसतरह अग्नि को प्रज्वलित करने में पवन निमित्त बनती है; उसीतरह बारह भावनाओं का चिन्तन-मनन वैराग्य के बढ़ाने में निमित्त बनता है।

छहढाला की पाँचवीं ढाल का स्मरण दिलाते हुए आचार्यश्री ने कहा ह्न 'देखो, कवि दौलतराम कहते हैं ह्न

'इन चिन्तत समसुख जागे, जिमि ज्वलन पवन के लागे।

इन बारह भावनाओं का चिन्तन करने से समता सुख उसीप्रकार जाग्रत हो जाता है, जिसप्रकार हवा लगने से अग्नि दहकने लगती है।

यहाँ कवि तो यह कह रहे हैं कि बारह भावनाओं के चिन्तन से सुख प्रगट होता है और अज्ञानी की हालत यह है कि इन्हें पढ़ते ही वह रोने लगता है।''

आचार्यश्री ने आगे कहा ह्न ''एक वयोवृद्ध ब्र. धर्मचन्द थे। वे जब भी १२ भावनाओं का पाठ करते तो मुश्किल से प्रारंभ की दो–तीन भावनायें पढ़ते ही आँसू बहाने लगते, भावुक हो उठते, गला रुँध जाता, आगे पढ ही नहीं पाते।''

मैंने उन्हें ऐसा करते अनेक बार देखा ह्न ''एक दिन मैंने उनसे पूछा ह्न भाई! आप १२ भावना पढ़ते–पढ़ते रो पड़ते हो! ऐसा क्यों? ये बारह भावनायें तो आनन्दजननी हैं, वैराग्यवर्द्धनी हैं, इनमें रोने का क्या काम?''

वे बोले ह्न ''रोयें नहीं तो क्या करें। इन भावनाओं में तो साफ–साफ लिखा है कि ह्न 'मरना सबको एक दिन' और 'मरतैं न बचावे कोई ' यह सोचते ही तो रोना आ जाता है।

तब मैंने कहा ह्न ''इन्हीं बारह भावनाओं में यह भी तो लिखा है ह्न 'इन चिन्तन समसुख जागे, जिमि ज्वलन पवन के लागे' ये क्यों नहीं पढ़ते? और भी देखो ह्न क्या–क्या लिखा है ह्न

पण्डित जयचन्दजी छाबड़ा लिखते हैं ह्न

द्रव्यरूप करि सर्वथिर, पर्यय थिर है कौन ?
द्रव्यदृष्टि आपा लखो, पर्ययनय करि गौण ।।''

वे बोले ह्न ''ये भावनायें तो निश्चय वालों की हैं और हम इनका अर्थ भी तो नहीं समझते। यह द्रव्य क्या है? पर्याय क्या है? और द्रव्यदृष्टि क्या है? स्वयं को कैसे देखें? हमने तो जिन्दगी भर वही 'राजा राणा' वाली बारह भावना ही पढ़ी है, उसे पढ़ते हैं तो रोना आ ही जाता है। क्या ऐसे रोने से कर्मों की निर्जरा नहीं होगी?''

उन ब्रह्मचारी बाबा की बातें सुनकर उनकी अज्ञानता और भोलेपन पर हमें मन ही मन हँसी तो बहुत आई, साथ में उन पर करुणा भी आई। अतः हमने गंभीर होकर कहा ह्न ''भाई! तुम एक बार आचार्यों की लिखी बारह भावनाओं को पढ़ो! और देखो! ये भावनायें कैसीं सुखद हैं, वैराग्यवर्द्धक हैं। रोना तो आर्तध्यान हैं ऐसे रोने से निर्जरा नहीं, पापास्रव होता है, जबकि १२ भावनाओं को समझ कर पढ़ने से कर्मों का संवर होता है। और हाँ, सुनो! तुम्हारी आयु अब अधिक नहीं है, पचत्तर तो पार कर ही चुके हो। अतः इस निश्चय–व्यवहार की पार्टियों के झमेले में न पड़ो। सत्य बात को समझने की कोशिश करो। क्या बारह भावना भी निश्चय व्यवहार वालों की अलग–अलग हैं?''

जब ब्रह्मचारी बाबा को यह समझ में आया तो वे फिर रोने लगे। हमने पूछा–''अब क्यों रोते हो?''

तो वे बोले ह्न महाराजजी! हम अब इसलिए रोते हैं कि ह्न ''हमने अब तक इन पार्टियों के चक्कर में अपना मनुष्यभव खराब कर लिया है। सत्य समझने की कोशिश ही नहीं की ह्न अब मरघट जाने का समय आया तब आपकी बात कुछ–कुछ समझ में आई। सो अब समझने का समय नहीं रहा, शक्ति नहीं रही। अब क्या करें?''

आचार्य श्री ने कहा कि ह्न 'हमने बाबाजी को आश्वासन दिया कि घबराओ मत 'जब जाग जाओ तभी है सबेरा' अतः भूत को भूल जाओ, वर्तमान को संभालो भविष्य स्वयं संभल जायेगा।'

ब्रह्मचारी धर्मचन्द का उदाहरण देकर जब आचार्य श्री ने श्रोताओं को जाग्रत होने की प्रेरणा दी तो अधिकांश श्रोताओं ने संकल्प किया कि 'अब जो भी स्वाध्याय करेंगे, उसे भलीभाँति समझकर करेंगे तथा तदनुसार ही आचरण करेंगे। सुनेंगे सबकी; पर करेंगे वही जो आगम सम्मत, वीतरागता पोषक एवं वैराग्यवर्द्धक होगा।'

आचार्यश्री ने कहा ह्न ''बाजार में तो असली–नकली सब तरह के सिक्के चलते हैं, वहाँ तो हम इतना विवेक रखते हैं कि बाजार में चलें तो चलने दो, उनको रोकना हमारा काम नहीं, वह जिम्मेदारी सरकार की है, हमें तो इतना ध्यान रखना है कि – वे नकली सिक्के हमारी जेब में नहीं आना चाहिए। यदि हमारी जेब में पकड़े जायेंगे तो हमें जेल होगी। इसीतरह जिनवाणी के नाम पर यदि कोई जनवाणी चलाता है तो चलने दो, वीतराग धर्म के नाम पर पाप–पुण्य रूप राग चलाना चाहता है तो चलाने दो, पर ध्यान रखो वह रागवर्द्धक पाप–पुण्य का सिक्का तुम्हारी श्रद्धारूपी जेब में नहीं आना चाहिए। अन्यथा भव्य होने पर भी मारीचि की भाँति एक कोड़ाकोड़ी सागर तक संसार में जन्म–मरण करना होगा। हाँ, तो सुनो !

कविवर भागचन्दजी ने एक ही छन्द में बारह भावनाओं को कितने अच्छे ढंग से लिखा है। वे कहते हैं ह्न

(इकीसा सवैया)

'जग है अनित्य तामैं सरन न वस्तु कोय।
तातैं दुःखरासि भववास कौं निहारिए।।
एक चित्त चिह्न सदा भिन्न परद्रव्यनि तैं।
अशुचि शरीर में न आपाबुद्धि धारिए।।
रागादिकभाव करै कर्म को बढ़ावै तातैं।
संवर स्वरूप होय कर्मबन्ध डारिए।।
तीन लोक माँहि जिन धर्म एक दुर्लभ है।
तातैं जिन धर्म को न छिनहू विसारिए।।

उपर्युक्त छन्द बोलते हुए आचार्यश्री ने अपने प्रवचन में कहा ह्न देखो अध्यात्मरसिक कवि भागचंदजी ने १२ भावनाओं को एक ही छन्द में संक्षेप में कैसे सुन्दर ढंग से अभिव्यक्त किया है। वे कहते हैं कि ह्न 'संसार, शरीर और भोगों तथा वस्तु स्वरूप का पुनः–पुनः चिन्तवन करना अनुप्रेक्षा है। मोक्षमार्ग में वैराग्य की वृद्धि के अर्थ बारह प्रकार की अनुप्रेक्षाओं का कथन जिनागम में प्रसिद्ध है, इन्हें वैराग्यमयी १२ भावनाएँ कहते हैं; इनके भाने से व्यक्ति शरीर वभोगों से उदासीन होकर साम्यभाव में स्थिति पा सकता है।' **(क्रमशः)**

अनेक स्थानों पर बाल संस्कार शिविरों की धूम

1. खण्डवा (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 6 से 13 जून, 2009 तक अष्टम बाल संस्कार शिविर एवं इन्द्रध्वज महामण्डल विधान सम्पन्न हुआ।

शिविर में पण्डित देवेन्द्रजी सिंगोडी तथा पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड मुख्य प्रवचनकार के रूप में उपस्थित थे। आपके अतिरिक्त श्री टोडरमल महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक पण्डित अशोकजी शास्त्री राघौगढ, पण्डित रीतेशजी शास्त्री सनावद, पण्डित निपुणजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित सचिनजी शास्त्री जबेरा, पण्डित संदीपजी शहपुरा, पण्डित अभिषेकजी मडदेवरा आदि विद्वानों का लाभ प्राप्त हुआ। विधान के सम्पूर्ण कार्य ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद के निर्देशन में सम्पन्न हुये।

शिविर के दौरान बालबोध पाठमाला, वीतराग–विज्ञान पाठमाला एवं रत्नकरण्डश्रावकाचार विषय पर कक्षायें ली गई, जिनके माध्यम से बच्चे एवं बड़े मिलाकर लगभग 400 लोग लाभान्वित हुये।

शिविर के मुख्य संयोजक श्री नरेन्द्रजी जैन खण्डवा थे।

2. पिड़ावा (राज.) : यहाँ श्रुतपंचमी के अवसर पर दिनांक 28 मई से 5 जून तक श्री कल्पद्रुम मण्डल विधान एवं बाल संस्कार शिविर हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ। प्रथम दिन आचार्य धरसेन, आचार्य पुष्पदंत एवं आचार्य भूतबली के चित्रों सहित विशाल शोभायात्रा निकाली गई।

इस मंगलमय कार्यक्रम में पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर एवं पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के प्रतिदिन तीनों समय प्रवचनसार, समयसार एवं मोक्षमार्ग प्रकाशक पर प्रवचन के अतिरिक्त क्रमबद्धपर्याय पर कक्षा का भरपूर लाभ मिला।

बाल संस्कार शिविर का आयोजन श्री दिग. जैन मुमुक्षु मण्डल नैरोबी (अफ्रिका) के विशेष सहयोग से किया गया, जिसमें 256 बालक–बालिकाओं ने धार्मिक संस्कार प्राप्त किये। अन्तिम दिन परीक्षा लेकर विशेष योग्यता प्राप्त बच्चों के अतिरिक्त अन्य सभी को सामान्य पारितोषिक वितरित किये गये।

विधि–विधान के सम्पूर्ण कार्य स्थानीय विद्वान पण्डित मनीषजी शास्त्री, पण्डित चिन्मयजी शास्त्री एवं श्री राकेशजी जैन ने सम्पन्न कराये। सम्पूर्ण कार्यक्रमों का कुशल निर्देशन पण्डित धनसिंहजी 'ज्ञायक' ने किया।

दिनांक 3 व 4 जून को रात्रि में इन्द्रसभा एवं कवि सम्मेलन विशेष आकर्षण के केन्द्र रहे। कवि सम्मेलन में श्रीमती सुधा चौधरी विदिशा, राष्ट्रपति सम्मानित बाल कवि आदित्य जैन कोटा के अतिरिक्त स्थानीय कवियों ने अपनी रचनायें प्रस्तुत कीं। सभा का संचालन ख्यातिप्राप्त कवि श्री अनिल जैन 'उपहार' ने किया।

सभी कार्यक्रमों में स्थानीय एवं बाहर गाँव से पधारे लगभग 600 साधर्मी भाई–बहिनों ने लाभ लिया।

3. जयपुर (राज.) : यहाँ मालवीय नगर सैक्टर–7 स्थित दि. जैन मंदिर में 10 वाँ बाल संस्कार शिविर दिनांक 17 मई से 31 मई, 2009 तक आयोजित किया गया। यह शिविर श्री नथमलजी झांझरी परिवार की ओर से पिछले 10 वर्षों से लगातार आयोजित किया जा रहा है।

आयोजन में मंदिर कमेटी से वाणीभूषण पं. विमलकुमारजी जैन एवं श्री गिरीशजी जैन का सराहनीय सहयोग रहा।

शिविर में मोक्षमार्ग प्रकाशक एवं बालबोध पाठमाला भाग–1 व 2 की कक्षायें चलाई गई। बाल कक्षायें पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ एवं पण्डित संजयजी सेठी ने लीं।

प्रौढ कक्षा एवं प्रवचन के माध्यम से पण्डित रमेशजी जैन (लवाण), पण्डित रमेशजी शास्त्री (दाऊ), पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित संजयजी सेठी, पण्डित मनीषजी शास्त्री 'कहान', पण्डित अनिलजी शास्त्री खनियांधाना एवं पण्डित परेशजी शास्त्री का लाभ मिला।

दिनांक 31 मई को समापन समारोह की अध्यक्षता पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल ने की। मुख्यअतिथि डॉ. श्रीयांसजी जैन एवं विशिष्ट अतिथि पण्डित पीयूषजी शास्त्री थे। आपके मार्मिक उद्बोधनों ने सभा को भाव–विभोर कर दिया।

4. मलकापुर (महा.) : यहाँ दिनांक 28 मई से 4 जून,09 तक बाल संस्कार शिविर एवं श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

प्रथम दिन समारोह में श्री भव्यचन्दजी बेलोकर ढासाला के करकमलों से ध्वजारोहण किया गया। मण्डल विधान का उद्घाटन डॉ. वैभवजी महाजन नागपुर ने किया। विशाल पण्डाल में भगवान विराजमान करने का सौभाग्य श्री नितिनजी वैद्य मलकापुर को मिला।

इस अवसर पर प्रतिदिन डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी के समयसार पर प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद के विधान की जयमाला पर प्रवचन हुये।

बाल संस्कार शिविर में लगभग 140 बच्चों ने लाभ लिया। कक्षायें ध्रुवधाम बांसवाड़ा से पधारे पण्डित सनतजी शास्त्री एवं पण्डित सुकुमारजी शास्त्री ने लीं।

विधि–विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ, पण्डित सुनीलजी'धवल' भोपाल एवं पं. कांतिजी इन्दौर ने सम्पन्न कराये।

कार्यक्रम में एडवोकेट श्री राजेशजी जैन, श्री जितेन्द्रजी जैन, श्री संजयजी वैद्य आदि का सराहनीय सहयोग रहा। **ह्न विनोद जैन निरखे**

5. इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ श्री पंचबालयति एवं विहरमान बीस तीर्थंकर जिनालय, साधना नगर में दिनांक 16 से 23 मई, 2009 तक श्री दिग. जैन कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट द्वारा जैनत्व बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

प्रतिदिन प्रात: 6.30 से दोपहर 1 बजे तक चलनेवाले इस शिविर में लगभग 1000 बालक–बालिकाओं ने लाभ लिया।

शिविर में पूरे देश से आये 25 विद्वानों एवं स्थानीय विद्वानों ने बालबोध पाठमाला भाग–1, 2, 3, वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग–1,2,3, लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका, छहढाला एवं प्रौढ कक्षा के माध्यम से धर्मगंगा प्रवाहित की।

विद्वानों में श्री टोडरमल महाविद्यालय जयपुर के स्नातक पण्डित अशोकजी मांगुलकर राघौगढ, पण्डित रितेशजी शास्त्री सनावद, पण्डित निलयजी शास्त्री सरदार शहर, पण्डित अमोलजी शास्त्री हिंगोली, पण्डित निपुणजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित सचिनजी शास्त्री जबेरा, पण्डित धीरजजी शास्त्री जबेरा, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री केलवाड़ा, पण्डित संदीपजी शास्त्री बड़कुल, पण्डित अंकितजी शास्त्री लूणदा, पण्डित विवेकजी शास्त्री दलपतपुर, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री, पण्डित दीपेशजी अमरमऊ, पण्डित राहुलजी दमोह, पण्डित सजलजी छिन्दवाड़ा, पण्डित शनिजी खनियांधाना, पण्डित एकत्वजी खनियांधाना एवं पण्डित राहुलजी नौगांव ने अपूर्व ज्ञानगंगा प्रवाहित की।

कार्यक्रम के प्रमुख संयोजक पण्डित तेजकुमारजी गंगवाल, श्री विजयजी बड़जात्या, श्री मनोहरलाल काला एवं श्री पदमजी पहाड़िया थे।

समापन समारोह के अतिथियों में श्री प्रकाशजी लुहाड़िया, श्री एम.के. जैन, श्री आर. के. मैना जैन, श्री प्रमोदजी जैन आदि ने अपने मार्मिक उद्बोधनों से सभा को संबोधित किया। इस अवसर पर शिविर में विशेष योग्यता प्राप्त विद्यार्थियों को पुरस्कार के साथ–साथ शिविर के श्रेष्ठ छात्र–छात्राओं को **शिविर प्रतिभा सम्मान** से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर श्री मनोहरलालजी काला एवं श्री पदमजी पहाड़िया ने ट्रस्ट की गतिविधियों का परिचय दिया। अंत में श्री विजयजी बड़जात्या ने सभी सहयोगियों का आभार व्यक्त किया।

6. द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ श्रुतपंचमी के अवसर पर दिनांक 28 मई से 4 जून तक श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दि. जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट की ओर से द्वितीय बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित अरुणजी शास्त्री बड़ामलहरा, पण्डित निलयजी शास्त्री सरदारशहर, पण्डित संजयजी शास्त्री बड़ामलहरा, पण्डित अंकितजी शास्त्री लूणदा, पण्डित विश्वासजी शास्त्री, श्रीमती स्वस्ती जैन आदि विद्वानों का सान्निध्य एवं लाभ मिला।

शिविर के संयोजक पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ एवं सह–संयोजक पण्डित विशेषजी शास्त्री व पण्डित स्वतंत्रजी शास्त्री थे। कार्यक्रम प्रभारी श्री मुन्नालालजी जैन एवं श्री प्रमोदजी मस्ताईं थे।

शिविर में 367 बच्चों ने धर्मलाभ लिया। अंतिम दिन परीक्षा लेकर पुरस्कार वितरित किये गये।

समापन समारोह में श्री दशरथ जैन–पूर्व मंत्री म.प्र. शासन, श्री कोमलचन्दजी जैन, श्री बाबूलालजी सेठ शाहगढ, इंजी. सुनीलजी जैन छतरपुर आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

श्री वीतराग–विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए–4, बापूनगर, जयपुर – 302015 (राजस्थान)

ग्रीष्मकालीन परीक्षा कार्यक्रम सत्र–2009

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
शनिवार 22 अगस्त 2009	1. बालबोध पाठमाला भाग–1 (बा.प्रथम खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग–1 (मौखिक) 3. वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग–1(प्रवेशिका प्रथम खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग–1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड (प्रथम वर्ष)
रविवार 23 अगस्त 2009	1. बालबोध पाठमाला भाग–2 (बा.द्वितीय खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग–2 (मौखिक) 3. वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग 2(प्रवेशिका द्वितीयखण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग–2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद प्रथम खण्ड (द्वितीय वर्ष) 10. विशारद द्वितीय खण्ड (प्रथम वर्ष)
सोमवार 24 अगस्त 2009	1. बालबोध पाठमाला भाग–3 (बा.तृतीय खण्ड) मौखिक 2. वीतराग–विज्ञान पाठमाला भाग–3 (प्रवेशिका तृतीय खण्ड) 3. रत्नकरण्डश्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड (द्वितीय वर्ष)

नोट –

(1) सुविधानुसार परीक्षा का समय सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक के बीच में कभी भी सैट किया जा सकता है।

(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।

(3) यदि किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।

(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।

ह्न ओमप्रकाश आचार्य (प्रबंधक ह्न परीक्षा बोर्ड)

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार 30

सातवाँ प्रवचन – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी कृत मोक्षमार्गप्रकाशक शास्त्र की विषयवस्तु के संबंध में चर्चा चल रही है। चौथे अधिकार में अगृहीत मिथ्यादर्शन, अगृहीत मिथ्याज्ञान और अगृहीत मिथ्याचारित्र का स्वरूप स्पष्ट किया गया है। अब इस पाँचवें अधिकार से गृहीत मिथ्यादर्शन, गृहीत मिथ्याज्ञान और गृहीत मिथ्याचारित्र का निरूपण आरंभ करते हैं।

इस बात का उल्लेख इसी अधिकार के आरंभ में पण्डितजी इसप्रकार करते हैं ह्न

''यहाँ अनादि से जो मिथ्यात्वादि भाव पाये जाते हैं, उन्हें तो अगृहीत मिथ्यात्वादि जानना; क्योंकि वे नवीन ग्रहण नहीं किये हैं। तथा उनके पुष्ट करने के कारणों से विशेष मिथ्यात्वादिभाव होते हैं, उन्हें गृहीत मिथ्यात्वादि जानना। वहाँ अगृहीत मिथ्यात्वादि का वर्णन तो पहले किया है, वह जानना और अब अगृहीत मिथ्यात्वादि का निरूपण करते हैं सो जानना।[१]''

जिसप्रकार कोई जन्मजात रोगी सचेत होकर भी कुपथ्य का सेवन करे तो उस रोगी का ठीक होना और अधिक कठिन हो जाता है; उसीप्रकार अनादि से अगृहीत मिथ्यादृष्टि जीव सैनी पंचेन्द्रिय दशा में विशेष ज्ञानशक्ति पाकर विपरीत मान्यता का पोषण करे तो उसका सुलझना और अधिक कठिन हो जाता है।

इसलिए जिसप्रकार वैद्य कुपथ्यों को विस्तार से बताकर उनके सेवन करने का निषेध करता है; उसीप्रकार यहाँ सद्गुरु अनादिकालीन मिथ्या श्रद्धानादि के पोषक बाह्य कारणों को विस्तार से बताकर उनका निषेध करते हैं।

गृहीत मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र का स्वरूप पण्डितजी अति संक्षेप में इसप्रकार स्पष्ट करते हैं ह्न

''कुदेव-कुगुरु-कुधर्म और कल्पित तत्त्वों का श्रद्धान तो मिथ्यादर्शन है। तथा जिनमें विपरीत निरूपण द्वारा रागादि का पोषण किया गया हो ह्न ऐसे कुशास्त्रों का श्रद्धानपूर्वक अभ्यास सो मिथ्याज्ञान है। तथा जिस आचरण में कषायों का सेवन हो और उसे धर्मरूप अंगीकार करे सो मिथ्याचारित्र है।[१]''

मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र की परिभाषा में कुदेव, कुगुरु और कुधर्म तथा कल्पित तत्त्वों के श्रद्धान को मिथ्यादर्शन; रागादि पोषक शास्त्रों के श्रद्धापूर्वक अभ्यास को मिथ्याज्ञान और धर्म मानकर कषायों के सेवनरूप आचरण को मिथ्याचारित्र कहा है; क्योंकि यह प्रकरण गृहीत मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र का है।

यह तो आपको ध्यान में है ही कि अगृहीत मिथ्यादर्शन, अगृहीत मिथ्याज्ञान और अगृहीत मिथ्याचारित्र के निरूपण के समय देहादि संयोगों में एकत्व, ममत्व, कर्तृत्व और भोक्तृत्वबुद्धि को मिथ्यादर्शन, देहादि संयोगों को निजरूप जानने, उनका स्वामी और कर्ता-भोक्ता जानने का नाम मिथ्याज्ञान और इन मिथ्यादर्शन व मिथ्याज्ञानपूर्वक विषय-कषाय में प्रवृत्ति को मिथ्याचारित्र कहा था।

मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र की उक्त परिभाषाओं में जो अन्तर दिखाई देता है, वह अगृहीत और गृहीत के भेद के कारण है। अगृहीत में अंतरंग की मुख्यता है और गृहीत में बाह्य की।

आचार्य उमास्वामी तत्त्वार्थसूत्र में तत्त्वार्थश्रद्धान को और आचार्य समन्तभद्र रत्नकरण्ड श्रावकाचार में सच्चे देव-शास्त्र-गुरु की श्रद्धा को सम्यग्दर्शन और इन्हीं के सम्यक् परिज्ञान को सम्यग्ज्ञान कहते हैं तथा सम्यग्दर्शन व सम्यग्ज्ञानसहित पाँच पापों के एकदेश त्याग को देशसंयम और सम्पूर्णत: त्याग को सकल संयम अर्थात् चारित्र कहते हैं।

उन्हीं सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र के विरुद्ध यहाँ गृहीत मिथ्यादर्शन के प्रकरण में कुदेव, कुगुरु और कुधर्म तथा कल्पित तत्त्वार्थों के श्रद्धान को मिथ्यादर्शन, धर्म के नाम पर श्रद्धापूर्वक रागादि पोषक शास्त्रों के अभ्यास को मिथ्याज्ञान और विषय-कषायों के सेवन सहित आचरण को धर्मरूप से अंगीकार करने को मिथ्याचारित्र कहा है।

अगृहीत मिथ्यादर्शन-मिथ्याज्ञान-मिथ्याचारित्र को अंतरंग वृत्ति और प्रवृत्ति रूप से प्रस्तुत किया है और गृहीत मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्र को निमित्तादि की अपेक्षा बाह्य व्यवहाररूप में समझाया जा रहा है।

जरा विचार तो करो, अनादिकाल से निगोद में तो यह जीव देहादि में एकत्व, ममत्व, कर्तृत्व और भोक्तृत्वबुद्धिरूप मिथ्यात्व से ग्रसित रहा; भाग्य से वहाँ से निकला और द्वीन्द्रियादि अवस्थाओं को पार करता हुआ महाभाग्य से इस सैनी पंचेन्द्रिय मनुष्य पर्याय में आया तो यहाँ कुगुरु, कुदेव और कुशास्त्रों के चक्कर में पड़ गया।

अन्तर में तो परपदार्थों को अपना मानने, उनका स्वामी और कर्ता-भोक्ता बनने का संस्कार था ही; ऊपर से कुदेव और कुगुरुओं से भी यही सुनने को मिला, कुशास्त्रों में भी यही पढ़ने को मिला कि देहादि संयोगों को संभालो। इसप्रकार अनादिकालीन मिथ्या मान्यता और अधिक पुष्ट हो गई तथा सन्मार्ग मिलना और अधिक दुर्लभ हो गया।

इस लोक में अनादिकालीन अगृहीत मिथ्यात्व की सुरक्षा और पोषण की कितनी बड़ी व्यवस्था है; उसका विवेचन पण्डितजी पाँचवें, छठवें और सातवें अधिकार में विस्तार से कर रहे हैं। उसकी

सुरक्षा के लिए पर कर्तृत्व के पोषक लोग प्रत्येक नगर की गली–गली में बैठे हैं, घर–घर में जम रहे हैं और निरन्तर पर कर्तृत्व की मान्यता को पुष्ट कर रहे हैं।

यह हमारा महाभाग्य है कि कहीं–कहीं इक्के–दुक्के महापण्डित टोडरमलजी जैसे ज्ञानी धर्मात्मा इसके विरुद्ध आवाज लगाते रहे हैं, डंका बजा–बजा कर जगाते रहे हैं; कहते रहे हैं कि हे भव्यजीवो ! इस अनादि–कालीन महा मिथ्यात्व को अब तो छोड़ो।

इस पर कुछ लोग कहते हैं कि क्यों गला खराब कर रहे हो; इस नक्कारखाने में कौन सुनता है तुम्हारी इस तूती की आवाज को।

उनसे हमारा कहना यह है कि जिनकी भली होनहार होगी, जिनकी काललब्धि आ गई होगी, जिनका संसार सागर का किनारा निकट आ गया होगा; वे निकटभव्यजीव सुनेंगे हमारी बात।

यह तो आप जानते ही हैं कि सागर के भीतर अन्तर गहराई में वडवाग्नि जलती है। जिसप्रकार पेट में लगी आग को जठराग्नि कहते हैं, जंगल में लगी आग को दावाग्नि कहते हैं; उसीप्रकार सागर के तल में जलनेवाली आग को वडवाग्नि कहते हैं।

एकबार सागर ने वडवाग्नि से कहा कि तू हमारे पेट में लाखों वर्ष से जल रही है; फिर भी हमारा तो कुछ नहीं बिगड़ा। जरा–सी गर्मी पड़ती है तो नदियाँ सूख जाती हैं, तालाब सूख जाते हैं; पर बाहर से सूरज तप रहा है, अन्दर तू जल रही है; पर क्या हुआ हमारा ? व्यर्थ ही क्यों जल रही है।

वडवाग्नि ने बड़ी ही विनम्रता से कहा कि पेट की अग्नि में दश तोला घी पड़ जावे तो बुझ जाती, चूले की आग एक लोटा पानी पड़ने से बुझ जाती है, जंगल की आग भी मेघ वर्षा होने से बुझ जाती है; पर मेरे ऊपर लाखों वर्षों से समुद्रों पानी पड़ा है, फिर भी मैं जिन्दा हूँ ह्न मेरी सत्ता के लिए क्या इतना ही पर्याप्त नहीं है ?

यह तो आपने सुना ही होगा कि जब नदियों में बाढ आती है तो उनके तट पर बसे ग्राम, नगर बह जाते हैं, उजड़ जाते हैं; संकट में पड़ जाते हैं। यदि सागर में बाढ आ जाय तो क्या होगा ? इसकी कल्पना की है कभी आपने ? अरे, भाई ! सागर में कभी बाढ नहीं आती; क्योंकि उसके पेट में वडवाग्नि जल रही है। उसने सागर पर अंकुश लगा रखा है।

सूरज का ताप उसके पानी को निरन्तर बादलों के रूप में उड़ा कर ले जा रहा है। उक्त अग्नि ने और सूरज की गर्मी ने भले ही सागर को पूरी तरह सुखा नहीं पाया; पर बेकाबू भी नहीं होने दिया, मर्यादा में रखा। क्या यह वडवाग्नि की कम उपयोगिता है ?

जिसप्रकार अत्यन्त शक्तिशाली हाथी को छोटा–सा अंकुश काबू में रखता है, उसे उश्रृंखल नहीं होने देता; उसीप्रकार इतने बड़े सागर को वडवाग्नि का अंकुश काबू रखता है, उश्रृंखल नहीं होने देता।

आज के इस मनुष्य लोक में गाँव–गाँव में, गली–गली में परकर्तृत्व के प्रतिपादन का बोल–बाला है। जहाँ देखो, वहाँ सर्वत्र उसकी ही चर्चा है। अकर्तावादी जैनदर्शन को माननेवाले भी कर्तृत्व के अहंकार में डूबे जा रहे हैं; सारी दुनिया को देह की सेवा में लगा रहे हैं, घर–परिवार से राग करने की प्रेरणा दे रहे हैं, देश और धर्म की रक्षा के नाम पर मरने–मारने को उकसा रहे हैं; ऐसे तूफानों से आन्दोलित मनुष्यलोक में यदि हम, पर में एकत्व–ममत्व का निषेध कर रहे हैं, पर के कर्तृत्व–भोक्तृत्व के विरोध की आवाज उठा रहे हैं तो क्या हमारे अस्तित्व के लिए इतना पर्याप्त नहीं है ?

भोगों के इस सागर में जो थोड़ी–बहुत मर्यादा दिखाई देती है; वह हमारे प्रयासों का ही प्रभाव है, हमारे प्रतिपादन के अंकुश का ही परिणाम है।

आपका यह कहना भी सही नहीं है कि इस नक्कारखाने में कौन सुनता हमारी इस तूती की आवाज को। अरे, भाई ! हमारी आवाज को सुननेवाले, हमारे लेखन को पढनेवाले, हमारी प्रेरणा से सन्मार्ग में लगनेवाले भी लाखों लोग हैं। न हमें श्रोताओं की कमी है, न पाठकों की और सन्मार्ग में लगनेवालों की भी कमी नहीं है।

इस पर वे कहते हैं कि यदि ऐसा है तो फिर आप ऐसा क्यों कहते हैं कि कौन सुनता है हमारी बात।

अरे, भाई ! अरबों में, लाखों ने सुन लिया, लाखों ने पढ लिया; तो भी तो ऊँट के मुँह में जीरा ही है ? इसलिए कभी–कभी हम कहते हैं कि कौन सुनता है हमारी आवाज ? पर आपने जो यह कहा कि इस नक्कारखाने में कौन सुनता है तुम्हारी इस तूती की आवाज को; इस पर हम कहना चाहते हैं कि हमारी तो तूती बोल ही रही है और बोलती भी रहेगी, जिनका भाग्य होगा, वे सुनेंगे और जिनके भाग्य में नहीं होगा, वे नहीं सुनेंगे। उनके लिए तो पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं ह्न

''जिसप्रकार बड़े दरिद्री को अवलोकनमात्र चिन्तामणि की प्राप्ति हो और वह अवलोकन न करे, तथा जैसे कोढ़ी को अमृत–पान कराये और वह न करे; उसीप्रकार संसार पीड़ित जीव को सुगम मोक्षमार्ग के उपदेश का निमित्त बने और वह अभ्यास न करे तो उसके अभाग्य की महिमा हमसे तो नहीं हो सकती। उसकी होनहार ही का विचार करने पर अपने को समता आती है। कहा है कि ह्न

साहीणे गुरुजोगे जे ण सुणंतीह धम्मवयणाइ।
ते धिट्ठदुट्ठचिता अह सुहडा भवभयविहुणा।।

स्वाधीन उपदेशदाता गुरु का योग मिलने पर भी जो जीव धर्मवचनों को नहीं सुनते, वे धीठ हैं और उनका चित्त दुष्ट है। अथवा जिस संसारभय से तीर्थंकरादि डरे, उस संसारभय से रहित हैं, वे बड़े सुभट हैं।'' **(क्रमशः)**

17 जून 2009, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन आइडल अलवर - 2009 सम्पन्न

अलवर (राज.) : यहाँ समाज में विद्यमान प्रतिभाओं का उचित सम्मान एवं उनका विशेष उपयोग हो ह्न इस उद्देश्य से अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा-अलवर ने 'जैन आइडल-2009' गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया। तीन चरणों में सम्पन्न इस प्रतियोगिता का फाईनल दिनांक 29 मई 2009 को विशिष्ट अतिथियों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

जूनियर ग्रुप में चिराग जैन एवं सीनियर ग्रुप में आस्था जैन को आइडल चुना गया। कार्यक्रम का संचालन श्री मनीष जैन प्रिंस एवं श्री विकास जैन ने किया। कार्यक्रम संयोजक फैडरेशन के प्रचार मंत्री श्री विपिन जैन थे।

इस अवसर पर फैडरेशन के राज. प्रदेशप्रभारी श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर ने इस प्रतियोगिता को प्रदेश स्तर पर; फिर अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित करने की बात रखी।

तमिलनाडु में तीन शिविर

ग्रीष्मावकाश के दौरान तमिलनाडु में आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति केन्द्र पौन्नूरमलै के तत्त्वावधान में त्रि-दिवसीय तीन शिविरों का आयोजन किया गया।

चेन्नई के कोलत्तूर ज्ञानदास भवन में 8 से 10 मई, **अरहंतगिरि मठ तिरुमलै** में 11 से 13 मई तथा **पौन्नूरमलै** में 15 से 17 मई तक शिविरों का आयोजन हुआ। विभिन्न क्षेत्रों से पधारे शिविरार्थियों को बालबोध पाठमाला एवं वीतराग-विज्ञान पाठमाला का अभ्यास कराया गया। प्रतिदिन जिनेन्द्र पूजन, प्रवचन, बाल कक्षा, तत्त्वचर्चा, भजन, प्रश्नमंच एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का संचालन किया गया।

शिविरों में विद्वानों के रूप में जैन कवि जंबूकुमारजी के अतिरिक्त श्री टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक विद्वान पण्डित जंबूकुमारन जैन, डॉ. उमापति जैन, पण्डित इलंगोवन जैन, पण्डित अशोक जैन, पण्डित जयराज जैन, पण्डित नाभिराजन जैन, पण्डित बालाजी जैन, पण्डित पद्मकुमार जैन, पण्डित विनोद जैन, पण्डित बसंत जैन, पण्डित सोमप्रभ जैन, पण्डित श्रीकांत जैन आदि ने गतिविधियों का संचालन किया।

आयोजन में सभी लोगों का सक्रिय सहयोग रहा।

शिविरों के आयोजक के रूप में **चेन्नई** से श्री रमेश जैन एवं श्री धरणेंद्र-दास जैन, **अरहंतगिरि** में स्वस्तिश्री धवलकीतिस्वामीजी एवं **पोन्नूरमलै** में श्री बी सी श्रीपालन, बी एस पी जैन, राजीव जैन का असीम सहयोग रहा।

ज्ञातव्य है कि तमिलनाडु में निवास करनेवाले लोगों के हृदय में वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिये श्री टोडरमल महाविद्यालय जयपुर के विद्वानों की आवश्यकता एवं अद्भुत समर्पण अनुभव किया जा रहा है। इसमें आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति केन्द्र की भूमिका सराहनीय है।

ह्न डॉ. बी. उपापति जैन

उज्जवल भविष्य की कामना

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक श्री संजीव जैन खडैरी पुत्र श्री तुलसीरामजी जैन ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) द्वारा आयोजित नेट दिस.-08 में हिन्दी विषय से सफलता हासिल कर ली है। ज्ञातव्य है कि इसके पूर्व आपने संस्कृत से भी नेट परीक्षा उत्तीर्ण की थी।

महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार आपके उज्जवल भविष्य की कामना करता है।

राजधानी दिल्ली में श्रुतपंचमी पर्व सम्पन्न

नई दिल्ली : अध्यात्मतीर्थ आत्म साधना केन्द्र के तत्त्वावधान में 24 मई को श्रुतस्कंध विधान एवं कन्या विद्यानिकेतन की बालिकाओं द्वारा श्रुतपंचमी पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया।

बहादुरगढ में फैडरेशन शाखा द्वारा 28 मई को पण्डित प्रयंकजी शास्त्री के सहयोग से सरस्वती पूजन एवं शांतिविधान का आयोजन हुआ।

प्रीतिविहार में 28 मई को ब्र. संध्याबेन के सान्निध्य में पण्डित संदीपजी शास्त्री द्वारा श्रुतस्कंध विधान कराया गया।

विश्वासनगर में परमागम मंदिर ट्रस्ट द्वारा 28 मई को पण्डित विवेकजी शास्त्री सागर के सहयोग से श्रुतस्कंध विधान कराया गया।

उस्मानपुरा में पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन के सहयोग से 31 मई को विशाल स्तर पर श्रुत पंचमी पर्व मनाया गया।

सभी कार्यक्रमों की सफलता में मुमुक्षु मण्डल दिल्ली प्रदेश, अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा-बहादुरगढ, शाखा-दिलशाद गार्डन, शाखा-शंकरनगर आदि का विशेष सहयोग रहा।

हार्दिक आमंत्रण

श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में लगनेवाला आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी रविवार, दिनांक 26 जुलाई से मंगलवार, 4 अगस्त, 09 तक आयोजित होने जा रहा है।

सभी साधर्मी मुमुक्षुओं को पधारने हेतु हमारा हार्दिक आमंत्रण है।

प्रकाशन तिथि : 13 जून 2009

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127